ऊँची अटरिया रंग भरी

पुस्तक परिचर्चा एवं लोकार्पण

'लोग पूछते हैं कि शास्त्रीय संगीत में लोकगीत और लोकधुन का क्या किरदार है? मैं कहता हूँ कि इसमें लोकगीत और लोकधुन का वही किरदार है जो गंगा के संदर्भ में गंगोत्री का है।' यह कथन संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष शेखर सेन का है। 24 अगस्त को संगीत नाटक अकादेमी के मेघदूत प्रेक्षागृह में पंडित राधावल्लभ चतुर्वेदी की पुस्तक 'ऊँची अटरिया रंग भरी' का लोकार्पण श्री शेखर सेन, डॉ. ऋतास्वामी चौधरी, श्री शरद दत्त तथा श्रीमती नीलम चतुर्वेदी के हाथों हुआ। पंडित राधावल्लभ चतुर्वेदी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में विशारद थे। ध्रुपद, धमार, ख़याल, ठुमरी, ग़ज़ल आदि विभिन्न शास्त्रीय शैलियों के गायक श्री चतुर्वेदी का लोकसंगीत के प्रति प्रेम और समर्पण आज भी स्तुत्य है। लखनऊ के भातखंडे संगीत महाविद्यालय से 1940 में संगीत विशारद की उपाधि प्राप्त करने के बाद सन् 1942 में आकाशवाणी लखनऊ में लोक-संगीतकार के पद पर नियुक्त हुए और तब से उनकी साधना का मूल केन्द्र लोकसंगीत ही रहा। उत्तर भारत के विभिन्न सांस्कृतिक अंचलों में घूम-घूम कर लोकगीतों का संचयन तथा उनकी स्वरलिपि तैयार करना ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। उन्होंने करीब 5000 से अधिक लोकगीतों का संकलन किया और उनकी स्वरलिपियाँ तैयार कीं। 'ऊँची अटरिया रंग भरी' उसी की एक कड़ी है, जिसमें कुल 106 संस्कार गीतों (जन्म से मृत्यु तक) का संकलन है। पुस्तक इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें लोकगीतों के साथ-साथ उसकी स्वरलिपियाँ भी दर्ज़ हैं। सामान्यतः शास्त्रीय संगीत की तुलना में लोकसंगीत को उचित स्थान नहीं दिया जाता। पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी भी शास्त्रीय संगीत के कलाकार थे, किन्तु उन्होंने लोक संगीत को जो महत्ता और स्थान दिया, वह स्तुत्य है। शेखर सेन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पंडितजी ने जो काम किया है, वह अपनी प्रकृति में बड़ा ही दुरूह था। उन्होंने शास्त्रीय एवं लोक संगीत के मध्य सेतु निर्माण का कार्य किया है। उन्होंने लोकगीतों को स्वरलिपि-बद्ध कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित कर दिया है। अतः उनका यह योगदान स्तुत्य है। उन्होंने कहा कि 'भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि यहाँ धरम का मरम भी संगीत है और संस्कार बिना गीत-संगीत के सम्पन्न नहीं होते।'

शेखर सेन के कथन की पुष्टि आलोच्य पुस्तक से भी होती है, जिसमें सरिया, सोहर, अन्नप्राशन, मुंडन, जनेऊ, विवाह, द्वाराचार, कलेवा, जेवनार, विदाई, चकिया, पनघट, कजरी, चौमासा, चैती, सोहनी, झूला, झूमर, रसिया इत्यादि अन्याय संस्कार गीतों का संकलन है। परिचर्चा का प्रारम्भ करते हुए पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी जी की पुत्री श्रीमती नीलम चतुर्वेदी ने कहा कि 'पिताजी की संगीत साधना का बहुत कुछ श्रेय माँ को जाता है, जिन्होंने हमेशा उनका सहयोग किया।' उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि वे अपने पिता और उनकी संगीत साधना की महत्ता को उनके जीते-जी नहीं समझ पाईं। उसका कारण भी उन्होंने बताया कि पिता की जब असमय मृत्यु हुई तब वे महज 18 वर्ष की थीं। पिता के देहांत के बाद जब उनके शिष्यों

और अन्य गुणी संगीतज्ञों का आना हुआ तब जाकर उन्हें एहसास हुआ कि उनके पिता केवल गृहस्थ ही नहीं प्रतिष्ठित संगीतज्ञ भी थे। ऐसा इसलिए भी हुआ कि पिता ने घर और बाहर को कभी मिश्रित नहीं किया।

श्रीमती नीलम चतुर्वेदी के बाद परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए दूरद्शन के पूर्व निदेशक श्री शरद दत्त ने कहा कि श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी उस जौहरी की तरह थे, जिनका जीवन हीरे की तलाश में बीता। निस्संदेह, उन्होंने ऐसे बहुत से गुमनाम गुणी लोक-कलाकारों को ढूँढा और उन्हें मंच प्रदान किया। शरद जी ने उपस्थित श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी जी की कई लोकधुनों का उपयोग फिल्मी गीतों में किया गया है। उन्होंने कई फिल्मों के नाम भी लिए। शरद दत्त की बात को ही आगे बढ़ाते हुए शेखर सेन ने कहा कि पहाड़ी आदि कई राग ऐसे हैं जिनका मूल आधार लोकधुन हैं। उन्होंने सचिन देव बर्मन ने बंदिनी फिल्म का गीत 'अब के बरस भेज मैया बाबुल को' का संगीत भी सोहर के लोकधुन पर आधारित है। तीनों वक्ताओं ने पुस्तक के कलेवर की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उत्कृष्ट आवरण पृष्ठ-सज्जा के लिए विनय जैन का आभार भी प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में संगीत नाटक अकादेमी के प्रकाशन विभाग के सहायक सम्पादक श्री अंकुर आचार्य ने सभी वक्ताओं तथा श्रोताओं का धन्यवाद किया।

संगीत का संसार असीम है। बूँद-बूँद से समुद्र की परिकल्पना सम्भवतः संगीत के सन्दर्भ में ही साकार लेती है। 'ऊँची अटरिया रंग भरी' के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है। इस पुस्तक के सन्दर्भ में कहरा निर्गुन की एक पंक्ति ही यथेष्ट होगी—चांद सुरुज सम दियना बरत है। यह पुस्तक कहने को दीप है किन्तु इसका प्रकाश सूर्य एवं चन्द्र की तरह प्रांजल और निर्मल है। अतः संदेह नहीं कि लोकगीतों के रसिक जनों और संगीत सेवियों के लिए यह एक प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध होगी।